Resource: Open Hindi Contemporary Version

Open Hindi Contemporary Version (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, Biblica, Inc, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Open Hindi Contemporary Version

Nehemiah 1:1

1 यह हाकालियाह के पुत्र नेहेमियाह के वचन हैं. यह घटना
बीसवें वर्ष के किसलेव महीने की है, जब मैं राजधानी शूशन
में था,

2 यहूदिया से कुछ लोग मेरे एक रिश्तेदार हनानी के साथ
आए; मैंने उनसे येरूशलेम के बारे में और उन यहूदियों के
बारे में जानकारी पाई, जो बंधुआई से बच निकले थे और जो
अब जीवित थे.

3 उन्होंने मुझे बताया, "वह बचे हुए यहूदी, जो बंधुआई से
जीवित बच निकल आये हैं और जो इस समय उस प्रदेश में
रह रहे हैं, वे बड़े दर्द में और निंदनीय अवस्था में हैं. येरूशलेम
की शहरपनाह टूट चुकी है और उसके प्रवेश फाटक जला
दिए जा चुके हैं."

4 यह सुनकर मैं बैठकर रोने लगा और मैं बहुत दिन रोता रहा;
कुछ दिन तक मैं स्वर्ग के परमेश्वर के सामने उपवास और
प्रार्थना करता रहा.

5 मैंने कहा: "याहवेह, स्वर्ग के परमेश्वर यह मेरी प्रार्थना है,
आप जो महान और आदरणीय परमेश्वर हैं, आप, जो उनके
प्रति अपनी वाचा और अपनी करुणा रखते हैं, जो आपके प्रति
अपने प्रेम में अटल और आज्ञापालन करते हैं,

6 आपके सेवक की प्रार्थना की ओर आपके कान लगे रहें और
आपकी आंखें खुली रहें, कि आप अपने सेवक की प्रार्थना सुनें,
मैं आपके चरणों में आपके सेवक इस्राएल वंशजों की ओर से
दिन-रात यह प्रार्थना कर रहा हूं. इस्राएलियों ने और हमने जो
पाप आपके विरुद्ध किए हैं, उन्हें मैं स्वीकार कर रहा हूं. मैंने
और मेरे पिता के परिवार ने पाप किए हैं.

7 हमारा आचरण आपके सामने बहुत ही दुष्टता से भरा रहा
है. हमने आपके आदेशों का पालन नहीं किया है, न ही हमने
आपके नियमों और विधियों का पालन ही किया है, जिनका
आदेश आपने अपने सेवक मोशेह को दिया था.

8 "आप अपने उस आदेश को याद कीजिए, जो आपने अपने
सेवक मोशेह को इस प्रकार दिया था: 'यदि तुम अविश्वासी हो
जाओगे तो मैं तुम्हें देशों के बीच बिखरा दूंगा.

9 मगर यदि तुम मेरी ओर फिरकर मेरे आदेशों का पालन
करके उनका अनुसरण करोगे, तो तुममें से बिखरे हुए लोगों
को यदि दूर आकाश के नीचे तक कर दिया गया है, मैं वहां से
भी उस जगह पर ले आऊंगा, जिस जगह को मैंने अपनी
प्रतिष्ठा की स्थापना के लिए सही समझा है.'

10 "वे आपके ही सेवक हैं, आपकी ही प्रजा, जिन्हें आपने अपने
असाधारण सामर्थ्य और बलवंत हाथ से छुड़ा लिया था.

11 प्रभु, आपसे मेरी प्रार्थना है, अपने सेवक की विनती पर कान
लगाएं और उन सेवकों की प्रार्थनाओं पर, जो आपका भय
मानते हैं. आज अपने सेवक को सफलता देकर उसके प्रति
इस व्यक्ति पर दया कीजिए." मैं इस समय राजा के लिए
पिलाने वाले के पद पर था.

Nehemiah 2:1

1 राजा अर्तहषस्ता के शासनकाल के बीसवें वर्ष में निसान
माह में जब राजा के सामने दाखमधु रखी हुई थी, मैंने उन्हें
दाखमधु परोस दी. इसके पहले उनके सामने मैं दुःखी होकर
कभी नहीं गया था.

2 यह देख राजा ने मुझसे सवाल किया, "जब तुम बीमार नहीं
हो, तो तुम्हारा चेहरा इतना उतरा क्यों है? यह मन की उदासी
के अलावा और कुछ नहीं." यह सुनकर मैं बहुत ही डर गया.

3 मैंने राजा को उत्तर दिया, "महाराज आप सदा जीवित रहें.
मेरा चेहरा क्यों न उतरे, जब वह नगर, जो मेरे पुरखों की कब्रों

का स्थान है, उजाड़ पड़ा हुआ है और उस नगर के फाटक जल चुके हैं."

4 तब राजा ने मुझसे पूछा, "तो तुम क्या चाहते हो?" तब मैंने स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना की.

5 मैंने राजा को उत्तर दिया, "अगर महाराज को यह सही लगे और अगर आप अपने सेवक से खुश हैं, तो मुझे यहूदिया जाने की अनुमति दें. वहां, जिस नगर में मेरे पुरखों की कब्रें हैं, मैं उस नगर को दोबारा बनवा सकूं."

6 तब राजा ने मुझसे पूछा, "इसके लिए तुम्हें कितना समय लगेगा और तुम्हारा लौटना कब होगा?" इस समय रानी भी राजा के पास बैठी थी. मैंने राजा के सामने एक समय तय करके बता दिया, सो राजा ने खुशी के साथ मुझे वहां जाने की अनुमति दे दी.

7 मैंने राजा से विनती की, "यदि यह महाराज को सही लगे, मुझे उस नदी के उस ओर के राज्यपालों के लिए महाराज द्वारा लिखे संदेश दे दिए जाएं, कि वे मुझे अपने राज्यों में से होकर यहूदिया तक पहुंचने की आज्ञा देते जाएं.

8 एक संदेश महाराज के बंजर भूमि के पहरेदार आसफ के लिए भी ज़रूरी होगा, कि वह मंदिर के किले के फाटकों की कड़ियों के लिए, शहरपनाह और उस घर के लिए जिसमें मैं रहूंगा, लकड़ी का इंतजाम कर दे." राजा ने सभी संदेश मुझे दे दिए, क्योंकि मुझ पर परमेश्वर की कृपादृष्टि बनी हुई थी.

9 जब उस नदी के पार के प्रदेशों के राज्यपालों से मेरी भेंट हुई, मैंने उन्हें राजा द्वारा लिखे गए संदेश सौंप दिए. राजा ने मेरे साथ अधिकारी, सैनिक और घुड़सवार भी भेजे थे.

10 जब होरोनी सनबल्लत और अम्मोनी अधिकारी तोबियाह को इस बारे में पता चला, तो उन दोनों को बहुत बुरा लगा, कि कोई इस्राएलियों का भला चाहनेवाला यहां आ पहुंचा है.

11 येरूशलेम पहुंचकर मैं वहां तीन दिन रहा.

12 मैं रात में उठ गया, मेरे साथ कुछ लोग भी थे. मैंने यह किसी को भी प्रकट नहीं किया, कि येरूशलेम के विषय में परमेश्वर ने मेरे मन में क्या करने का विचार डाला है. मेरे साथ उस पशु के अलावा कोई भी दूसरा पशु न था, जिस पर मैं सवार था.

13 इसलिये रात में मैं घाटी के फाटक से निकलकर अजगर कुएं और कूड़ा फाटक की दिशा में आगे बढ़ा. मैं येरूशलेम की शहरपनाह का बारीकी से जांच करता जा रहा था. शहरपनाह टूटी हुई थी और फाटक जले हुए थे.

14 तब मैं झरने के फाटक और राजा के तालाब पर जा पहुंचा, यहां मेरे पशु के लिए आगे बढ़ना नामुमकिन था.

15 इसलिये मैं रात में ही नाले से होता हुआ शहरपनाह का बारीकी से मुआयना करता गया. तब मैंने दोबारा घाटी फाटक में से प्रवेश किया और लौट गया.

16 अधिकारियों को यह पता ही न चल सका, कि मैं कहां गया था या यह कि मैंने क्या काम किया था. मैंने अब तक यहूदियों, पुरोहितों, प्रशासकों, अधिकारियों और बाकियों पर, जिन्हें काम में जुट जाना था, कुछ भी नहीं बताया था.

17 तब मैंने उनसे कहा, "हमारी दुर्दशा आपके सामने साफ़ ही है; येरूशलेम उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक गिरे पड़े हैं. आइए, हम येरूशलेम की शहरपनाह को दोबारा बनाएं, कि हम दोबारा हंसी का विषय न रह जाएं."

18 मैंने उनको यह साफ़ बताया कि किस तरह मुझ पर मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि हुई और यह भी कि राजा ने मेरे लिए आश्वासन के शब्द कहे थे. यह सुन उन्होंने कहा, "चलिए, हम बनाने का काम शुरू करें." इस तरह वे इस अच्छे काम में लग गए.

19 किंतु जब होरोनी सनबल्लत, अम्मोनी अधिकारी तोबियाह और अरबी गेशेम ने यह सब सुना, वे हमारा मज़ाक उड़ाने लगे, घृणा से भरकर वे हमसे कहने लगे, "क्या कर रहे हो यह? क्या तुम राजा के विरुद्ध विद्रोह करोगे?"

20 तब मैंने उन्हें उत्तर दिया, "स्वर्ग के परमेश्वर ही हमें इसमें सफलता देंगे; इसलिये हम उनके सेवक बनाने का काम शुरू करेंगे. इसमें आपका कोई लेना देना नहीं है न ही यहां आपका कोई अधिकार है और न येरूशलेम में आपका कोई स्मारक ही है."

Nehemiah 3:1

Nehemiah 3:1

1 तब महापुरोहित एलियाशिब ने अपने भाइयों को अपने साथ
लिया, जो पुरोहित थे और इन्होंने भेड़-फाटक को बना दिया.
उन्होंने इसे समर्पित किया और इसके पल्ले उसमें जड़ दिए.
उन्होंने शहरपनाह को हम्मेआ और हनानेल मीनारों तक
समर्पित कर दिया.

2 इसके पास वाले भाग को येरीख़ो के लोगों ने बनाया और
उनके पास वाले इलाके को इमरी के पुत्र ज़क्कूर ने.

3 इसके बाद सेनाआह के पुत्रों ने मछली फाटक को बनाया.
उन्होंने इसके पल्ले की कड़ियां डालीं, द्वारों को चिटकनियों
और छड़ों से लटका दिया.

4 इनके बाद हक्कोज़ के पोते उरियाह के पुत्र मेरेमोथ ने
मरम्मत का काम किया. उसके पास वाले भाग की मरम्मत
का काम मेशेजाबेल के पोते बेरेखियाह के बेटे मेशुल्लाम ने
किया. और फिर यही काम बाअनाह के बेटे सादोक ने भी
किया.

5 इसके अलावा उसके पास के भाग की मरम्मत तकोआ
निवासियों ने की, मगर उनके नगर के बड़े लोगों ने अपने
अधिकारियों को इस काम में सहायता नहीं दी.

6 पासेह के पुत्र योइयादा ने और बेसादियाह के पुत्र मेशुल्लाम
ने पुराने फाटक की मरम्मत की. इन्होंने इसकी कड़ियां डालीं
और इसके पल्लों को इसकी चिटकनियों और इनकी छड़ों से
लटका दिया.

7 उनके पास वाले भाग की मरम्मत गिबियोनवासी मेलातियाह
और मेरोनोथी यादोन ने की, जो गिबयोनवासी और
मिज़पाहवासी थे, उन्होंने उस नदी के दूसरी ओर के प्रदेश के
राज्यपाल के लिए उसके सिंहासन की मरम्मत भी की.

8 उसके पास वाले भाग की मरम्मत सुनारों में से हरहइयाह
के पुत्र उज्ज़िएल ने की. उसके पास वाले भाग की मरम्मत
सुगंध बनाने वालों में से एक ने की, जिसका नाम हननियाह
था. इस प्रकार उन्होंने येरूशलेम को फैली हुई शहरपनाह
तक पहले की तरह ला दिया.

9 उनके पासवाली जगहों की मरम्मत हूर के पुत्र रेफ़ाइयाह ने,
जो येरूशलेम के आधे क्षेत्र का अधिकारी था, की.

10 इनके पासवाली जगहों की मरम्मत हारुमाफ के पुत्र
येदाइयाह ने अपने घर के सामने के इलाके में की. उसके
पासवाली जगहों की मरम्मत हशबनेइयाह के पुत्र हत्तुष ने की.

11 हारिम के पुत्र मालखियाह और पाहाथ-मोआब के पुत्र
हस्षूब ने एक दूसरे भाग की और भट्ठियों के मीनारों की
मरम्मत की.

12 उसके पास वाले भाग की मरम्मत हल्लेहेष के पुत्र शल्लूम
ने, जो येरूशलेम में के आधे क्षेत्र का अधिकारी था, अपनी
पुत्रियों के साथ मिलकर की.

13 हानून और ज़ानोहावासियों ने घाटी फाटक की मरम्मत की.
उन्होंने इसको बनाया और इसके पल्लों को इसकी
चिटकनियों और छड़ों सहित लटका दिया. उन्होंने इसके
अलावा कूड़ा फाटक तक लगभग पांच सौ मीटर शहरपनाह
को भी बनाया.

14 रेखाब के पुत्र मालखियाह ने, जो बेथ-हक्केरेम क्षेत्र का
अधिकारी था, कूड़ा फाटक की मरम्मत की. उसने इसको
बनाया और इसके पल्लों को इसकी चिटकनियों और छड़ों
सहित लटका दिया.

15 कोल-होज़ेह के पुत्र शल्लूम ने, जो मिज़पाह क्षेत्र का
अधिकारी था, झरना फाटक की मरम्मत की. उसने इसको
बनाया, पल्लों को चिटकनियों और छड़ों सहित लटका दिया
और उसके ऊपर छत भी बना दी. इसके अलावा उसने
शेलाह के तालाब की शहरपनाह को भी बनाया. यह
शहरपनाह राजा के बगीचे से लेकर उन सीढ़ियों तक बनाई
गई, जो दावीद के नगर से उतरती हुई आती थी.

16 इसके बाद अज़बुक के पुत्र नेहेमियाह ने, जो बेथ-त्सूर के
आधे क्षेत्र का अधिकारी था, दावीद की कब्रों की गुफा तक के
बिंदु तक शहरपनाह की मरम्मत की और वीरों के घर और
तालाबों तक की शहरपनाह की भी.

17 पास वाले भाग की मरम्मत बानी के पुत्र रेहुम की देखरेख
में लेवियों ने की. उसके पास वाले भाग की मरम्मत, काइलाह
के आधे क्षेत्र के अधिकारी हशाबियाह ने अपने क्षेत्र में पूरी की.

18 उसके पास वाले भाग की मरम्मत उनके भाइयों ने काइलाह के क्षेत्र के बचे हुए भाग के अधिकारी हेनादाद के पुत्र बव्वाई की निगरानी में पूरी हुई.

19 उसके पास वाले भाग की मरम्मत येशुआ के पुत्र एज़र ने की, जो मिज़पाह का अधिकारी था, यह उस शस्त्रों के घर के सामने था, जो चढ़ाई तक था.

20 उसके पास वाले भाग की मरम्मत ज़ब्बाई के पुत्र बारूख ने बहुत ही उत्साह से की, जो उस चढ़ाई से लेकर महापुरोहित एलियाशिब के घर के द्वार तक है.

21 उसके पास वाले भाग की हक्कोज़ के पोते उरियाह के पुत्र मेरेमोथ ने और दूसरे भागों की भी मरम्मत की. यह भाग एलियाशिब के घर के द्वार से शुरू होकर उसके घर के आखिरी छोर तक था.

22 उसके पास वाले भाग की मरम्मत घाटी के पास रहनेवाले पुरोहितों ने की.

23 उनके पास वाले भाग की मरम्मत बिन्यामिन और हस्षूब ने की. उन्होंने अपने-अपने घरों के सामने के भाग की मरम्मत की. उनके पास वाले भाग की मरम्मत मआसेइयाह के पुत्र अननियाह के पोते अज़रियाह ने अपने घर के पास की शहरपनाह की मरम्मत की.

24 उसके पास वाले भाग की मरम्मत हेनादाद के पुत्र बिन्नूइ ने की. यह भाग अज़रियाह के घर से मोड़ तक और कोने तक फैला हुआ था.

25 उज़ाई के पुत्र पलाल ने उस भाग की मरम्मत की, जो मोड़ के सामने से शुरू होकर राजमहल के ऊपरी माले के घर के गुम्मट तक है. यह पहरेदारों के आंगन के पास है. उसके पास वाले भाग की मरम्मत पारोश के पुत्र पेदाइयाह ने की.

26 मंदिर के उन सेवकों ने, जो ओफेल में रहते थे, जल फाटक के सामने के भाग तक की मरम्मत की. यह वह फाटक था, जो पूर्व दिशा की ओर था, जहां पहरेदारों का गुम्मट था.

27 इनके पास वाले भाग की मरम्मत तकोआ निवासियों ने की. यह भाग बाहर निकले हुए पहरेदारों के गुम्मट के सामने से ओफेल की शहरपनाह तक फैला हुआ था.

28 पुरोहितों ने घोड़ा फाटक के ऊपर के भाग की मरम्मत की, हर एक ने अपने-अपने घर के सामने के भाग की.

29 उनके पास वाले भाग की मरम्मत इम्मर के पुत्र सादोक ने की जो उसके घर के सामने का भाग था. उसके पास वाले भाग की मरम्मत शेकानियाह के पुत्र शेमायाह ने की, जो पूर्वी फाटक का द्वारपाल था.

30 उसके पास वाले भाग की मरम्मत शेलेमियाह के पुत्र हननियाह और ज़लाफ़ के छठे पुत्र हानून ने की. उसके पास वाले भाग की मरम्मत बेरेखियाह के पुत्र मेशुल्लाम ने की जो उसके घर के सामने का भाग था.

31 उसके पास वाले भाग का मालखियाह ने, जो सुनारों में से एक था, मंदिर के सेवकों और व्यापारियों के घर से लेकर, जो मुस्तर अर्थात् मुआयना फाटक के सामने था, कोने के ऊपरी कमरे तक मरम्मत का काम पूरा किया.

32 तब कोने के ऊपरी कमरे और भेड़-फाटक के बीच की शहरपनाह की मरम्मत सुनारों और व्यापारियों ने पूरी की.

Nehemiah 4:1

1 जब सनबल्लत को यह मालूम हुआ कि हम शहरपनाह को दोबारा से बना रहे हैं, वह गुस्से से भर गया और हम यहूदियों का मज़ाक उड़ाने लगा.

2 उसने अपने साथ में काम करनेवालों और शमरिया के सेनाध्यक्षों के सामने कहा, “यह निर्बल यहूदी कर क्या रहे हैं? क्या ये लोग अपने लिए इसको दोबारा बना लेंगे? तब क्या वे बलि चढ़ा सकेंगे? क्या वे यह काम एक ही दिन में पूरा कर सकेंगे? क्या वे पत्थर के टुकड़ों के ढेर से भवन बनाने के लायक पत्थर निकाल सकेंगे, जबकि ये आग में जल चुके हैं?”

3 अम्मोनी तोबियाह जो उसके पास ही खड़ा था, कहने लगा, “अरे, वे लोग जो बना रहे हैं, वह ऐसा है, कि अगर एक लोमड़ी ही उस पर कूद पड़े तो उनकी बनाई हुई पत्थर की शहरपनाह ढह जाएगी!”

Nehemiah 4:1

4 हमारे परमेश्वर, सुन लीजिए कि हमारा कैसा अपमान हो रहा
है! उनके द्वारा की जा रही इस निंदा को उन्हीं पर लौटा दीजिए
और उन्हें बंधुआई के देश में लूट का सामान बना दीजिए.

5 उनके पाप को क्षमा न कीजिए. आपके सामने से उनका पाप
मिटाया न जाए क्योंकि उन्होंने शहरपनाह बनाने वालों का
मनोबल खत्म कर दिया है.

6 इस तरह हमने शहरपनाह को बनाया और सारी शहरपनाह
उसकी आधी ऊंचाई तक पूरी हो गई, क्योंकि लोग इस काम
के प्रति दृढ़ थे.

7 इस मौके पर जब सनबल्लत, तोबियाह, अरबियों,
अम्मोनियों, और अशदोदियों ने यह सुना, कि येरूशलेम की
शहरपनाह का मरम्मत का काम तेजी पर है और सभी नाके
अब बंद किए जाने लगे हैं, वे बहुत ही गुस्सा हो गए.

8 उन सभी ने मिलकर येरूशलेम पर हमला करने का षड्यंत्र
रचा, कि इसके द्वारा वहां गड़बड़ी डाली जा सके.

9 इसलिये हमने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की और उनकी
योजनाओं का ध्यान रखते हुए वहां दिन और रात के लिए
पहरेदार ठहरा दिए.

10 सो यहूदिया में लोग इस तरह कहने लगे: "बोझ उठाने वालों
का बल घट गया है, फिर भी मलबा बहुत है; हम खुद ही
शहरपनाह बनाने के लायक नहीं रहे हैं."

11 हमारे शत्रुओं ने आपस में विचार-विमर्श किया, "हम ऐसा
करें: हमारे उनके बीच में पहुंचने तक उन्हें यह पता ही न
चलने पाए, तब हम उनको मार के इस काम को खत्म कर
देंगे."

12 उनके आस-पास के यहूदियों ने दस बार आकर हमें इस
षड्यंत्र की सूचना दी, "वे लोग हर एक दिशा से आकर हम
पर हमला करेंगे."

13 इसलिये मैंने शहरपनाह के पीछे उन जगहों पर पहरेदार
ठहरा दिए, जहां-जहां ऊंचाई कम थी जो जगह अब तक खुली
पड़ी थी. मैंने परिवारों को उनकी तलवारों, भालों और धनुषों
के साथ बैठा दिया.

14 जब मुझे उनके मन में आ रहे डर का अहसास हुआ, मैंने
रईसों, अधिकारियों और बाकी लोगों को यह कहा, "कोई
ज़रूरत नहीं उनसे डरने की! आप याद रखिए: सिर्फ प्रभु को,
जो महान और प्रतापी है. अपने भाइयों, अपने पुत्रों, अपनी
पुत्रियों, अपनी पत्नियों और अपने घरों की भलाई को ध्यान में
रखकर युद्ध के लिए तैयार हो जाइए."

15 हमारे शत्रुओं को यह मालूम हो गया कि हमें उनके षड्यंत्र
का पता चल चुका है और परमेश्वर ने उनकी योजना विफल
कर दी है. हम सभी शहरपनाह के अपने-अपने काम में
दोबारा लग गए.

16 उस दिन के बाद मेरे आधे सेवक शहरपनाह के काम करते
थे और आधे कवच पहनकर बर्छी, धनुष और ढाल लिए हुए
रहते थे. यहूदाह के सारे घराने को हाकिमों का समर्थन मिला
हुआ था.

17 वे सभी, जो शहरपनाह को बनाने में लगे थे और जो सामान
उठाने में लगे थे, एक हाथ से काम करते थे और दूसरे में
हथियार थामे रहते थे.

18 काम करते हुए भी हर एक मिस्त्री अपनी जांघ पर तलवार
लटकाए हुए रहता था और जिस व्यक्ति की जवाबदारी थी
नरसिंगा फूंकना, वह लगातार मेरे पास ही खड़ा रहता था.

19 रईसों, अधिकारियों और दूसरे लोगों को मैंने कहा, "यह
काम बड़ा और फैला हुआ है और हम सभी इस शहरपनाह
पर एक दूसरे से अलग हो चुके हैं.

20 इसलिये जब कभी तुम्हें नरसिंगे की आवाज सुनाई दे, तुम
उसी दिशा में आकर हमारे पास इकट्ठा हो जाना. हमारे
परमेश्वर हमारे लिए युद्ध करेंगे."

21 इस प्रकार हम इस काम में लग गए-आधे लोग सुबह से
लेकर तारों के दिखने तक बर्छी लिए हुए खड़े रहते थे.

22 उस समय मैंने लोगों से यह भी कहा, "हर एक व्यक्ति रात
के समय अपने-अपने सेवक के साथ येरूशलेम में ही रहे, कि

रात में तो वे पहरेदार हो जाएं और दिन के समय काम करने लगें."

23 न तो मेरे लिए, न मेरे संबंधियों के लिए, न मेरे सेवकों के लिए और न उन पहरेदारों के लिए, जो मेरे साथ साथ बने रहते थे, अपने कपड़े बदलने का मौका मिल पाता था; जब हम जलाशयों के पास जाते थे, तब भी हथियारों को आपने साथ रखते थे.

Nehemiah 5:1

1 इसी समय लोगों और उनकी पत्नियों ने उनके यहूदी साथियों के साथ झगड़ना शुरू कर दिया.

2 इसका कारण था वे लोग, जो यह कह रहे थे "हम, हमारे पुत्र और हमारी पुत्रियां गिनती में बहुत हैं; इसलिये हमें अनाज दिया जाए कि हम उसे खाकर ज़िंदा रह सकें."

3 कुछ और भी थे, जो कह रहे थे "हमने अपने खेत, हमारे अंगूर के बगीचे और अपने घर गिरवी रखे हुए हैं कि इस अकाल की स्थिति में हमें अनाज तो मिल सके."

4 इनके अलावा भी कुछ और थे, जो यह कह रहे थे "हमने अपने खेतों और अंगूर के बगीचों पर राजा द्वारा ठहराया गया कर भरने के लिए कर्ज़ लिया हुआ है.

5 हम भी अपने भाई-बंधुओं के समान हड्डी-मांस के ही हैं, हमारी संतान उनकी संतान के समान ही है; फिर भी देख लीजिए हमें अपने पुत्र-पुत्रियों को दास होने के लिए सौंपने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है. हमारी कुछ पुत्रियां तो पहले ही ज़बरदस्ती बंधक बना ली गई हैं. अब हम निस्सहाय रह गए हैं, क्योंकि हमारे खेत और अंगूर के बगीचे अब दूसरों के अधिकार में चले गए हैं."

6 उनकी शिकायतें और बातें सुन मैं बहुत ही क्रोधित हो गया.

7 मैंने अपने मन में सोचा, फिर ऊंचे पदाधिकारियों और शासकों से भी सलाह ली और फिर मैंने उनसे कहा, "आप में से हर एक अपने ही भाई-बन्धु से ज़बरदस्ती ब्याज वसूली कर रहा है!" इसलिये मैंने उनके विरुद्ध एक बड़ी सभा की.

8 उनसे मैंने कहा, "हमने अपनी शक्ति भर उन यहूदी भाई-बंधुओं को दाम देकर उन देशों से छुड़ाया है, जहां उन्हें बेच दिया गया था. अब क्या आप लोग इन्हें दोबारा उन्हीं को बेचते जाएंगे, कि हमें उन्हें एक बार फिर उनसे खरीदना पड़े?" वे चुप रहे और अपने बचाव में कहने के लिए उनके पास कुछ भी न था.

9 मैंने उन्हें दोबारा चेतावनी दी, "आप जो कुछ कर रहे हैं, वह गलत है. हमारे शत्रु देश हमारी निंदा करें, इस बात का ध्यान रखते हुए क्या यह सही नहीं कि आप अपने परमेश्वर का भय मानकर चलें?

10 खुद मैंने, मेरे भाइयों ने और मेरे सेवकों ने उन्हें उधार के रूप में सिक्के और अनाज देना शुरू कर दिया है. कृपा कर हम उनसे यह ज़बरदस्ती भुगतान कराना बंद कर दें.

11 कृपा कर आज ही उन्हें उनके खेत, अंगूर के बगीचे, उनके जैतून के बगीचे और उनके घर उन्हें लौटा दें. इसके अलावा उनका धन, अनाज, नई दाखमधु और तेल का सौवां भाग भी, जो आप उनसे ज़बरदस्ती ले रहे है."

12 उन्होंने इसके उत्तर में कहा, "हम उन्हें यह सब लौटा देंगे, उनसे कुछ भी ज़बरदस्ती नहीं लेंगे. वही करेंगे, जो आप के द्वारा सुझाया गया है." तब मैंने पुरोहितों को बुलवा लिया और उनसे यह शपथ ले ली कि वे इस प्रतिज्ञा के अनुसार ही करेंगे.

13 तब मैंने अपने बाहरी कपड़े के सामने का छोर झटकते हुए कहा, "परमेश्वर ऐसे हर एक मनुष्य को उसके घर से और उसकी संपत्ति से ठीक उसी प्रकार झटक दे, जो इस शपथ को पूरी न करेगा, यहां तक कि उसे इस तरह हिला दिया जाए कि वह पूरी तरह खाली ही हो जाए." यह सुन सारी सभा कह उठी, "आमेन!" और उनके मुंह से याहवेह की स्तुति निकली. लोगों ने अपनी शपथ के अनुसार ही किया.

14 राजा अर्तहषस्ता के राज्य-काल के बीसवें साल से बत्तीसवें साल तक; बारह साल, जिस दिन से मुझे यहूदिया का राज्यपाल बनाया गया था, न तो मैंने और न मेरे रिश्तेदारों ने राज्यपाल के लिए तय किया गया भोजन खाया.

15 मुझसे पहले के राज्यपालों ने तो प्रजा पर भारी बोझ लाद दिया था. वे उनसे उनका भोजन और अंगूरों का रस छीन लिया करते थे, साथ ही चांदी के चालीस शकेल भी; यहां तक

कि उनके साथी सेवक तक प्रजा का शोषण किया करते थे. परमेश्वर का भय मानने के कारण मैं ऐसा न कर सका.

16 मैंने खुद को शहरपनाह बनाने के काम में लगा दिया. हमने कोई भी ज़मीन नहीं खरीदी. मेरे सभी सेवक इस काम के लिए वहां इकट्ठे हो जाते थे.

17 मेरे भोजन की मेज़ पर हमारे पास के देशों से आए लोगों के अलावा एक सौ पचास यहूदी और अधिकारी हुआ करते थे.

18 मेरे हर रोज़ के भोजन के लिए एक बैल, छः सबसे अच्छी भेड़ें और कुछ पक्षी तैयार किए जाते थे. दस दिन में एक बार तरह-तरह की दाखमधु बड़ी मात्रा में परोसी जाती थी. इतना सब होने पर भी मैंने राज्यपाल के लिए ठहराया गया भोजन नहीं मंगवाया; क्योंकि वैसे भी प्रजा बोझ के नीचे दबी जा रही थी.

19 मेरे परमेश्वर, मेरे द्वारा इस प्रजा के हित में किए गए सभी कामों के लिए मुझे याद रखियेगा.

Nehemiah 6:1

1 जब हमारे शत्रुओं सनबल्लत, तोबियाह, अरबी गेशेम और बाकी शत्रुओं को इसका समाचार मिला कि मैंने शहरपनाह को दोबारा बना लिया है, कि शहरपनाह में अब कहीं भी कोई दरार नहीं रह गई है, यद्यपि इस समय तक फाटकों में पल्ले बैठाए नहीं गए थे,

2 तब सनबल्लत और गेशेम ने मुझे यह संदेश भेजा "आप आइए कि हम ओनो के मैदान में चेपिरिम नामक स्थान पर भेंट करें." मगर इसके द्वारा उनका इरादा मेरा बुरा करने का ही था.

3 तब मैंने अपने दूत उन्हें इस संदेश के साथ भेजे: "मेरा यह काम बहुत बड़ा है, इसलिये मेरा यहां आना संभव नहीं है. यह कैसे सही हो सकता है कि मैं इसे छोड़कर आपसे भेंट करने वहां आऊं?"

4 उन्होंने चार बार यही संदेश भेजा और मैंने भी उन्हें वही उत्तर दिया.

5 तब सनबल्लत ने अपने सेवक द्वारा एक संदेश मेरे लिए भेजा यह वही संदेश पांचवी बार भेजा गया था. उसके हाथ में दिया यह खुला पत्र था.

6 पत्र में लिखा था: "देश-देश के लोगों में यह कहा जाने लगा है और उसकी ख़बर हमें गशमू से प्राप्त हुई है, कि आप और यहूदी विद्रोह की योजना बना रहे हैं. शहरपनाह बनाना इसी योजना का भाग है. इन सूचनाओं के अनुसार आप उनको राजा बनने की योजना बना रहे हैं.

7 इसके लिए तो आपने येरूशलेम में भविष्यद्वक्ता भी ठहरा दिए हैं, जिनकी जवाबदारी होगी यह घोषणा करना: 'यहूदियों में अब एक राजा है!' अब यही ख़बर राजा को भी दी ही जाएगी. इसलिये अब आप आ जाइए हम आपस में सलाह करें."

8 इसके उत्तर में मैंने उसे अपना दूत इस संदेश के साथ भेजा "आपके कहने के अनुसार यहां कुछ भी नहीं किया जा रहा हैं यह सब तो खुद आपके ही दिमाग की उपज है."

9 उन सभी का लक्ष्य हमें डराना ही था. उनका सोचना था, "इससे वे डर जाएंगे और यह काम पूरा न हो सकेगा." मगर परमेश्वर, मेरी बाजुओं में ताकत दीजिए.

10 मैं मेहेताबेल के पोते देलाइयाह के पुत्र शेमायाह के घर पर गया, जो घर से बाहर जाने में असमर्थ था, उसने प्रस्ताव रखा, "हम परमेश्वर के भवन में मंदिर के अंदर ही इकट्ठा हों और मंदिर के दरवाजे बंद कर लें, क्योंकि वे आपकी हत्या के उद्देश्य से यहां आ रहे हैं और वे रात में ही आपकी हत्या करना चाह रहे हैं."

11 किंतु मैंने इनकार किया, "क्या मेरे जैसे व्यक्ति के लिए इस प्रकार भागना अच्छा होगा? और क्या मुझ जैसे व्यक्ति के लिए मंदिर में जाकर अपना जीवन बचाना सही होगा? मैं नहीं जाऊंगा वहां!"

12 तब मुझे यह अहसास हो गया, कि निश्चित ही यह परमेश्वर द्वारा भेजी गई सलाह नहीं थी! उसने तो यह भविष्यवाणी के रूप में इसलिये कहा था, कि उसे तोबियाह और सनबल्लत ने पैसा दिया था.

13 शेमायाह को पैसे देकर मुझे डराने के लिए काम पर रखा गया था, कि मैं डरकर वही करूं, जिससे मैं परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर बैठूं, और इसकी वजह से उन्हें मुझ पर दोष लगाने का मौका मिल जाए और मैं उनके लिए निंदा का पात्र बन जाऊं.

14 मेरे परमेश्वर, आप तोबियाह और सनबल्लत के इस काम को भुला दीजिए. उनके अलावा उस स्त्री, भविष्यद्वक्ता नोआदिया को भी और उन सभी भविष्यवक्ताओं को भी, जो मुझे डराने की कोशिश कर रहे थे.

15 इस प्रकार एलुल महीने की पच्चिसवीं तारीख पर 52 दिनों में शहरपनाह की मरम्मत का काम पूरा हो गया.

16 सभी शत्रुओं को यह समाचार मिल गया, हमारे सभी पास वाले देशों ने यह देख लिया. वे बहुत डर गए. क्योंकि उनके सामने यह साफ़ हो गया था कि यह काम हमारे परमेश्वर की सहायता ही से पूरा हो सका था.

17 इसके अलावा उन्हीं दिनों में यहूदिया के बड़े अधिकारियों और तोबियाह के बीच चिट्ठी बहुत आती-जाती थी.

18 क्योंकि यहूदिया के अनेक व्यक्ति तोबियाह का पक्ष लेने की शपथ लिए हुए थे, क्योंकि वह आराह के पुत्र शेकनियाह का दामाद था और उसके पुत्र येहोहानन का विवाह बेरेखियाह के पुत्र मेशुल्लाम की पुत्री से हुआ था.

19 इसके अलावा, वे मेरे ही सामने उसके भले कामों की सूचना भी दे दिया करते थे. तब तोबियाह ने मुझे डराने के लिए पत्र भेजना शुरू कर दिया.

Nehemiah 7:1

1 जब शहरपनाह बनाने का काम पूरा हो गया, मैंने पल्लों को ठीक जगह पर बैठा दिया और द्वारपालों, गायकों और लेवियों को चुना,

2 मैंने अपने भाई हनानी और गढ़ के हाकिम हननियाह को येरूशलेम का अधिकारी ठहरा दिया, क्योंकि हननियाह विश्वासयोग्य व्यक्ति था और वह परमेश्वर का बहुत भय मानने वाला व्यक्ति था.

3 उनके लिए मेरा आदेश था, “जब तक सूरज में गर्मी रहे येरूशलेम के फाटक न खोले जाएं और जब तक पहरेदार द्वार पर खड़े ही होंगे, द्वार बंद ही रखे जाएं और उनमें चिटकनी लगी रहे. जो द्वारपाल ठहराए जाएं, वे येरूशलेम के रहनेवाले ही हों; हर एक को अपने-अपने निर्दिष्ट स्थानों पर और शेष अपने घरों के सामने के द्वार पर खड़ा किये जाए.”

4 नगर फैला हुआ और बड़ा था, किंतु निवासियों की गिनती थोड़ी ही थी और अभी घर नहीं बने थे.

5 तब मेरे परमेश्वर ने मेरे मन में यह विचार डाला कि रईसों, अधिकारियों और प्रजा को इकट्ठा किया जाए कि वंशावली के अनुसार उन्हें गिना जाए. मुझे वह पुस्तक भी मिल गई, जिसमें उन व्यक्तियों के नाम लिखे थे, जो सबसे पहले यहां पहुंचे थे. मुझे उस पुस्तक में जो लेखा मिला, वह इस प्रकार था:

6 इस प्रदेश के वे लोग, जो बाबेल के राजा नबूकदनेज़्ज़र द्वारा बंधुआई में ले जाए गए थे और जो बंधुआई से यहूदिया और येरूशलेम, अपने-अपने नगर को लौट आए थे, वे इस प्रकार हैं

7 वे ज़ेरुब्बाबेल, येशुआ, नेहेमियाह, अज़रियाह, रामियाह, नाहामानी, मोरदकय, बिलषान, मिसपार, बिगवाई, नेहुम और बाअनाह के साथ लौटे थे. कुल-पिताओं के नाम के अनुसार इस्राएल देश के पुरुषों की गिनती थी:

8 पारोश 2,172

9 शेपाथियाह 372

10 आराह 652

11 पाहाथ-मोआब के वंशजों में से येशुआ एवं योआब के वंशज 2,818

12 एलाम 1,254

13 ज़त्तू 845

14 ज़क्काई 760

15 बिन्नूइ 648

16 बेबाइ 628

17 अजगाद 2,322

18 अदोनिकम 667

19 बिगवाई 2,067

20 आदिन 655

21 हिज़किय्याह की ओर से अतेर 98

22 हाषूम 328

23 बेज़ाइ 324

24 हरिफ 112

25 गिबयोन 95

26 बेथलेहेम और नेतोपाह के निवासी 188

27 अनाथोथ के निवासी 128

28 बेथ-अज़मावेह के निवासी 42

29 किरयथ-यआरीम के कफीराह तथा बएरोथ के निवासी 743

30 रामाह तथा गेबा के निवासी 621

31 मिकमाश के निवासी 122

32 बेथेल तथा अय के निवासी 123

33 अन्य नेबो के निवासी 52

34 अन्य एलाम के निवासी 1,254

35 हारिम के निवासी 320

36 येरीख़ो के निवासी 345

37 लोद, हदिद तथा ओनो के निवासी 721

38 सेनाआह के निवासी 3,930

39 पुरोहित: येशुआ के परिवार से येदाइयाह के वंशज, 973

40 इम्मर के वंशज 1,052

41 पशहूर के वंशज 1,247

42 हारिम के वंशज 1,017

43 लेवी: होदवियाह के वंशजों में से कदमिएल तथा येशुआ के वंशज 74

44 गायक: आसफ के वंशज 148

45 द्वारपाल निम्न लिखित वंशों से: शल्लूम, अतेर, तालमोन, अक्कूब, हतिता, शेबाई 138

46 मंदिर सेवक निम्न लिखित वंशों से: ज़ीहा, हासुफ़ा, तब्बओथ

47 केरोस, सिया, पदोन

48 लेबानाह, हागाबाह, शामलाई

49 हनान, गिद्देल, गाहार

50 रेआइयाह, रेज़िन, नेकोदा,

51 गज्ज़ाम, उज्जा, पासेह,

52 बेसाई, मिऊनी, नेफिसिम,

53 बकबुक, हकूफा, हरहूर,

54 बाज़लुथ, मेहिदा, हरषा,

55 बारकोस, सीसरा, तेमाह,

56 नेज़ीयाह, हातिफा.

57 शलोमोन के सेवकों के वंशज इन वंशों से: सोताई, हसोफेरेथ, पेरिदा,

58 याला, दारकोन, गिद्देल,

59 शेपाथियाह, हत्तील, पोचेरेथ-हज्ज़ेबाइम, अमोन.

60 मंदिर के सेवक और शलोमोन के सेवकों की कुल गिनती 392

61 ये व्यक्ति वे हैं, जो तेल-मेलाह, तेल-हरषा, करूब, अद्दान तथा इम्मर से आए, तथा इनके पास अपनी वंशावली के सबूत नहीं थे, कि वे इस्राएल के वंशज थे भी या नहीं:

62 देलाइयाह के वंशज, तोबियाह के वंशज तथा नेकोदा के वंशज, 642

63 पुरोहितों में: होबाइयाह के वंशज, हक्कोज़ के वंशज तथा बारज़िल्लाई, जिसने गिलआदवासी बारज़िल्लाई की पुत्रियों में से एक के साथ विवाह किया था, और उसने उन्हीं का नाम रख लिया.

64 इन्होंने अपने पुरखों के पंजीकरण की खोज की, किंतु इन्हें सच्चाई मालूम न हो सकी; तब इन्हें सांस्कृतिक रूप से अपवित्र माना गया तथा इन्हें पुरोहित की जवाबदारी से दूर रखा गया.

65 अधिपति ने उन्हें आदेश दिया कि वे उस समय तक अति पवित्र भोजन न खाएं, जब तक वहां कोई ऐसा पुरोहित न हो, जो उरीम तथा थुम्मिन से सलाह न ले लें.

66 सारी सभा की पूरी संख्या हुई 42,360.

67 इनके अलावा 7,337 दास-दासियां तथा 245 गायक-गायिकाएं भी थी.

68 उनके घोड़ों की गिनती 736 और खच्चरों की 245,

69 ऊंटों की 435 और गधों की गिनती 620 थी.

70 पूर्वजों के परिवारों के प्रधानों ने इस काम के लिए आर्थिक सहायता दी. राज्यपाल ने खजाने में 1,000 सोने के द्राखमा, 50 चिलमचियां और पुरोहितों के लिए ठहराए गए 530 अंगरखे दिए.

71 पूर्वजों के परिवारों के कुछ प्रधानों ने इस काम के लिए खजाने में 20,000 सोने के द्राखमा और 2,200 चांदी मीना दिए.

72 वह सब, जो बाकी लोगों ने भेंट में दिया, वह था कुल 20,000 सोने के द्राखमा, 2,000 चांदी मीना और पुरोहितों के 67 अंगरखे.

73 अब पुरोहित, लेवी, द्वारपाल, गायक, कुछ सामान्य प्रजाजन, मंदिर के सेवक, जो सभी इस्राएल वंशज ही थे, अपने-अपने नगरों में रहने लगे. सातवें महीने तक पूरा इस्राएल अपने-अपने नगर में बस चुका था.

Nehemiah 8:1

1 एक बड़ी भीड़ के रूप में पूरा इस्राएल उस चौक में इकट्ठा
हो गया, जो जल फाटक के सामने है. उन्होंने व्यवस्था के ज्ञानी
पुरोहित एज़्रा से विनती की थी, कि वह याहवेह द्वारा इस्राएल
के लिए दी हुई मोशेह की व्यवस्था की पुस्तक अपने साथ
लाएं.

2 तब पुरोहित एज़्रा सातवें महीने के पहले दिन उन सभी स्त्री-
पुरुषों की सभा के सामने वह व्यवस्था की पुस्तक लेकर आए,
जो सुनकर समझ सकते थे.

3 एज़्रा सुबह से लेकर दोपहर तक जल फाटक के सामने
इकट्ठा भीड़ के सामने उन स्त्री-पुरुषों के लिए पढ़कर सुनाते
रहे, जो सुनकर समझ सकते थे, ये सभी व्यवस्था की पुस्तक
पर ध्यान लगाए थे.

4 एज़्रा एक लकड़ी की चौकी पर खड़े हुए थे, जो इसी मौके के
लिए खास तौर पर बनाई गई थी. इस मौके पर उनके दाईं ओर
मत्तीथियाह, शेमा, अनाइयाह, उरियाह, हिलकियाह और
मआसेइयाह खड़े हुए थे और उनके बाईं ओर थे पेदाइयाह,
मिषाएल, मालखियाह, हाषूम, हासबद्दानाह, ज़करयाह और
मेशुल्लाम.

5 एज़्रा ने पूरी भीड़ के देखते इस पुस्तक को खोला, क्योंकि वह
उस ऊंची चौकी पर खड़े हुए थे. जैसे ही उन्होंने पुस्तक खोली,
पूरी भीड़ खड़ी हो गई.

6 तब एज़्रा ने याहवेह, महान परमेश्वर की स्तुति की और भीड़
ने कहा: "आमेन, आमेन!" उन सभी लोगों ने अपने हाथ उठाए
हुए थे, तब बड़े ही आदर के साथ भीड़ ने भूमि की ओर
झुककर याहवेह की स्तुति की उनके मुंह ज़मीन पर ही लगे
रहे.

7 जब सभी लोग अपनी-अपनी जगह पर ठहरे हुए थे, येशुआ,
बानी, शेरेबियाह, यामिन, अक्कूब, शब्बेथाइ, होदियाह,
मआसेइयाह, केलिता, अज़रियाह, योज़ाबाद, हानन,
पेलाइयाह और लेवी लोगों को व्यवस्था की पुस्तक का मतलब
साफ़-साफ़ समझाते जाते थे.

8 वे इस पुस्तक से पढ़ते जाते-परमेश्वर की व्यवस्था में से और
वे उसका अनुवाद भी करते जाते थे कि सभी लोग पढ़े गए
भाग को समझते भी जाएं.

9 तब नेहेमियाह ने, जो राज्यपाल थे, पुरोहित एज़्रा ने, जो
व्यवस्था के ज्ञानी थे और लेवियों ने, जो सभी लोगों के शिक्षक
थे, घोषणा की: "याहवेह तुम्हारे परमेश्वर के सामने यह दिन
पवित्र है; न तो शोकित होओ, और न ही रोओ," क्योंकि
व्यवस्था के वचन सुनकर सभी लोग रोने लगे थे.

10 नेहेमियाह ने उन्हें आदेश दिया "जाइए, अच्छा-अच्छा
भोजन कीजिए, मीठा-मीठा रस पीजिए और कुछ भाग उसे
भी दे दीजिए, जिसके पास यह सब तैयार किया हुआ नहीं है;
क्योंकि यह दिन हमारे याहवेह के सामने पवित्र है. दुःखी न
रहिए; क्योंकि याहवेह के दिए हुए आनंद में ही आपका बल
है."

11 इस प्रकार लेवियों ने सभी को यह कहकर साथ शांत किया,
"आप शांत हो जाइए. आप दुःखी न हों; क्योंकि यह पवित्र दिन
है."

12 तब सभी लोग खाने-पीने के लिए चले गए और उन्होंने
उत्सव के लिए कुछ भाग दूसरों को भी दिए; क्योंकि यह एक
खास उत्सव था. यह इसलिये कि उन्होंने पवित्र व्यवस्था-
विधान का मतलब समझ लिया था.

13 इसके बाद दूसरे दिन सारी प्रजा के पितरों के प्रधान
पुरोहित और लेवी व्यवस्था के ज्ञानी एज़्रा के सामने इकट्ठा हुए,
कि यह मालूम कर सकें कि व्यवस्था के वचनों का मतलब
क्या है.

14 उनके विचार करने का विषय था मोशेह के द्वारा याहवेह
की आज्ञा अनुसार सातवें महीने में झोपड़ियों के उत्सव के
मौके पर इस्राएल वंशजों का रहन-सहन कैसा हो.

15 इसलिये उन्होंने घोषणा करके येरूशलेम में और राज्य के
सभी नगरों में यह घोषणा करवा दी, "पहाड़ों पर जाकर ज़ैतून,
जंगली जैतून, मेहन्दी, खजूर और अन्य पत्तियों के पेड़ों की
डालियां लाई जाएं कि इनका इस्तेमाल व्यवस्था में लिखी हुई
विधि के अनुसार झोपड़ियां बनाने के लिए किया जा सके."

16 तब लोग बाहर गए, और डालियां लेकर आए और अपने-
अपने लिए झोपड़ियां बना लीं; हर एक ने अपनी छत पर और
अपने आंगन में और परमेश्वर के भवन के आंगन में, उस चौक

में जो जल फाटक के सामने है और एफ्राईम फाटक के सामने के चौक पर.

17 बंधुआई से लौटे हुओं की पूरी भीड़ ने झोपड़ियां बनाईं और उनमें रहे भी. बल्कि इस्राएल वंशजों ने नून के पुत्र यहोशू के शासनकाल से अब तक यह नहीं किया था. यह बहुत बड़ा आनंद का उत्सव हो गया.

18 एज्रा हर रोज़, पहले दिन से आखिरी दिन तक परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से सुनाया करते थे. आदेश के अनुसार आठवें दिन विशेष महासभा बुलाई गई.

Nehemiah 9:1

1 इसी महीने की चौबीसवीं तारीख पर इस्राएली इकट्ठा हुए. वे उपवास कर रहे थे, वे टाट पहने हुए थे और उन्होंने अपने-अपने सिरों पर धूल भी डाल ली थी.

2 इस्राएलियों ने अपने आपको सभी परदेशियों से अलग कर लिया था, वे खड़े हो गए और उन्होंने वहां अपने पाप और अपने पूर्वजों के पापों को भी अंगीकार किया.

3 जब वे अपनी-अपनी जगह पर ही खड़े थे, वे छः घंटे याहवेह, अपने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक को पढ़ते रहे और बाकी छः घंटे वे याहवेह, अपने परमेश्वर के सामने पाप अंगीकार और उनकी स्तुति करते रहे.

4 इसके बाद येशुआ, बानी, कदमिएल, शेबानियाह, बुन्नी, शेरेबियाह, बानी और केनानी लेवियों के लिए ठहराई गई चौकी पर खड़े हो गए और ऊंची आवाज में याहवेह, अपने परमेश्वर की दोहाई दी.

5 इसके बाद लेवियों, येशुआ, कदमिएल, बानी, हशबनेइयाह, शेरेबियाह, होदियाह, शेबानियाह और पेथाइयाह ने भीड़ को आज्ञा दी: "उठो, याहवेह, अपने परमेश्वर की हमेशा स्तुति करते रहो!" "आपका महिमामय नाम धन्य कहा जाए और यह सारी प्रशंसा और स्तुति से ऊपर ही बनी रहे!

6 वह याहवेह तो सिर्फ आप ही हैं. आकाशमंडल के बनानेवाले आप ही हैं. आकाशमंडल और सारे नक्षत्र, यह पृथ्वी और उस पर की सारी वस्तुएं, सागर और उनमें की सारी वस्तुएं, आपने उन सबको जीवन दिया है. आकाश की शक्तियां आपके सामने झुककर आपको दंडवत करती हैं.

7 "आप ही वह याहवेह परमेश्वर हैं जिन्होंने अब्राम को चुना और उन्हें कसदियों के ऊर में से निकाला और उन्हें वह नाम अब्राहाम दिया.

8 आपने यह जान लिया था कि उनका हृदय आपके प्रति विश्वासयोग्य है. इसलिये आपने उनके साथ वाचा बांधी कि आप उन्हें कनानियों, हित्तियों, अमोरियों, परिज्ज़ियों, यबूसियों गिर्गाशियों का देश उनके वंशजों को देंगे. आपने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की, क्योंकि आप धर्मी परमेश्वर हैं.

9 "मिस्र में हमारे पूर्वजों का दुःख आपने देखा था, लाल सागर तट पर आपने उनकी विनती सुन ली.

10 तब आपने फ़रोह के विरोध में चिन्ह और अद्भुत चमत्कार दिखाए. यह सब आपने फ़रोह के सेवकों और मिस्र देश की प्रजा के विरुद्ध किया, क्योंकि आप यह देख रहे थे, कि वे यह सब हमारे पूर्वजों के विरुद्ध कर रहे थे. ऐसा करके आपने अपने लिए बड़ा नाम किया है, जो आज तक बना है.

11 आपने उनके सामने सागर को दो भाग कर दिया. वे सागर के बीच में से सूखी ज़मीन पर चलते हुए चले गए. जो उनका पीछा कर रहे थे, आपने उन्हें गहराइयों में ऐसा ड़ाल दिया जैसे उफ़नते हुए समुद्र में पत्थर डाला जाए.

12 दिन में आप उनका मार्गदर्शन बादल के खंभे से और रात में आग के खंभे से करते थे, कि जिस मार्ग पर उन्हें चलना था उस पर उजाला बना रहे.

13 "तब आपने सीनायी पहाड़ पर उतरकर स्वर्ग से उनसे बातें की; आपने उनके लिए सच्ची व्यवस्था और अच्छी आज्ञाएं दी, आदर्श व्यवस्था और आज्ञा.

14 आपने उन्हें अपने पवित्र शब्बाथ के बारे में बताया, आपने उनकी भलाई में अपने सेवक मोशेह के द्वारा आज्ञाएं, विधियां और व्यवस्था दीं.

15 आपने उनकी भूख मिटाने के लिए स्वर्ग से भोजन दिया, उनकी प्यास बुझाने के लिए चट्टान से पानी निकाला. आपने

उन्हें आज्ञा दी कि उस देश में प्रवेश कर उस पर अधिकार करें, जिसे देने की आपने उनसे प्रतिज्ञा की थी.

16 “मगर उन्होंने, हमारे पूर्वजों ने घमण्ड़ किया; वे हठीले बन गए और उन्होंने आपके आदेशों को न माना.

17 उन्होंने आपकी आवाज को सुनना ही न चाहा. उन्होंने आपके द्वारा किए गए अद्‌भुत चमत्कारों को भुला दिया, जो आपने उनके बीच में किए थे; इसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने मिस्र की बंधुआई में लौट जाने के लक्ष्य से अपने लिए एक प्रधान चुन लिया. किंतु आप क्षमा करनेवाले परमेश्वर हैं, अनुग्रहकारी और दयालु, क्रोध करने में धीमे और प्रेम करने में अपार. आपने उन्हें अकेला न छोड़ा.

18 उस मौके पर भी नहीं, जब उन्होंने अपने लिए बछड़े की मूर्ति बनायी थी और यह घोषित कर दिया था: ‘यही है तुम्हारा परमेश्वर, जिसने तुम्हें मिस्र से निकाला है,’ इस प्रकार उन्होंने परमेश्वर का बहुत अपमान किया.

19 “अपनी अद्‌भुत दया में आपने उन्हें बंजर भूमि में अकेला न छोड़ा; दिन में न तो बादल के खंभे ने उनका साथ छोड़ा कि उन्हें मार्गदर्शन मिलता रहे, न ही रात में उस आग के खंभे ने, कि उनके रास्ते में उजाला रहे, जिस पर उन्हें आगे बढ़ना था.

20 आपने अपना भला आत्मा उनके लिए दे दिया, कि वह उन्हें समझाते जाएं. आपने उन्हें मन्ना खिलाना न छोड़ा और उनकी प्यास बुझाने के लिए पानी हमेशा बना रहा.

21 सच तो यह है, कि बंजर भूमि में आप उनकी आवश्यकताओं को पूरा करते रहें, उन्हें किसी प्रकार की कोई कमी न हुई; न उनके कपड़े ही फटे और न ही उनके पैरों में सूजन आई.

22 “आपने राज्य और लोग उनके वश में कर दिए और उन्हें क्षेत्र का हर एक कोना भी दे दिया. उन्होंने हेशबोन के राजा सीहोन के देश पर अधिकार कर लिया और बाशान के राजा ओग के देश पर भी.

23 आपने उनके वंशजों की गिनती आकाश के तारों के समान अनगिनत कर दी और उन्हें उस देश में ले आए, जिसमें प्रवेश कर उस पर अधिकार कर लेने का आदेश आपने उनके पूर्वजों को दिया था.

24 तब उनके वंशजों ने उस देश में प्रवेश किया और उस पर अधिकार कर लिया. आपने ही उनके सामने से उस देश के निवासी कनानियों को उनके अधीन कर दिया. उस देश के राजा और प्रजा को आपने उनके हाथ में दे दिया, कि वे उनके साथ अपनी इच्छा अनुसार व्यवहार करें.

25 उन्होंने गढ़ नगरों और उपजाऊ भूमि को अपने अधिकार में ले लिया. उन्होंने उन सभी घरों को अपने अधिकार में कर लिया, जिनमें सब प्रकार के अच्छे-अच्छे सामान भरे हुए थे: चट्टानों में खोदा गया हौद, अंगूर के बगीचे, ज़ैतून के बगीचे और बहुल फलदाई पेड़. वे उनको खाते थे, वे तृप्त हुए, वे अच्छी तरह से पोषित होते चले गए और आपकी बड़ी भलाई के प्रति वे खुशी मनाते रहे.

26 “फिर भी वे आपसे फिर गए और उन्होंने आपसे विद्रोह किया. उन्होंने तो आपकी व्यवस्था को अपने पीठ पीछे फेंक दिया, वे उन भविष्यवक्ताओं का वध कर देते थे, जो उन्हें इस उद्देश्य से चेतावनी और झिड़कियां देते थे, कि वे आपकी ओर लौट जाएं, वे परमेश्वर की घोर निन्दाएं करते चले गए.

27 यही कारण था कि आपने उन्हें उनके सतानेवालों के अधीन कर दिया, जो उन्हें सताते रहे; मगर जब अपने दुःख के समय में उन्होंने आपकी दोहाई दी, आपने अपनी बड़ी करुणा के अनुसार स्वर्ग से उनकी सुन ली, आपने उनके लिए छुड़ानेवाले भी भेजे.

28 “मगर जैसे ही उन्हें यह छुटकारा मिलता था, वे आपके सामने दोबारा बुराई करने लगते थे; फलस्वरूप आपने उन्हें उनके शत्रुओं के अधीन कर दिया कि वे उन पर शासन करें. जब उन्होंने आपकी दोहाई दी, आपने स्वर्ग से उनकी सुन ली. बहुत बार आपने अपनी करुणा के अनुसार उन्हें छुड़ाया.

29 “उन्हें अपनी व्यवस्था की ओर फेरने के उद्देश्य से आप उन्हें चेतावनी पर चेतावनी देते रहें. मगर वे अपने हठ में ही अड़े रहें, आपके आदेशों को न मानते थे और आपके नियमों के विरुद्ध पाप करते रहें, जिनका पालन करने में ही मानव का जीवन है. अपने हठ में वे आपकी आज्ञा को ठुकराते चले गए.

30 फिर भी, सालों तक आप उनकी सहते रहे. आप उन्हें अपनी आत्मा के द्वारा अपने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से चेतावनी देते रहे; मगर तब भी उन्होंने आपकी न सुनी.

इसलिये आपने उन्हें उन देशों के निवासियों के अधीन कर दिया.

31 फिर भी, अपनी अपार दया में आपने उन्हें मिटा नहीं दिया
और न ही उन्हें अकेला छोड़ दिया; क्योंकि आप दयालु और
अनुग्रहकारी परमेश्वर हैं.

32 "इसलिये, हमारे परमेश्वर, आप जो महान, सर्वशक्तिमान
और भय-योग्य हैं, जो अपनी वाचा को स्थिर रखते हैं, जो
करुणा से भरपूर हैं, आपकी नज़रों में हमारी सारी कठिनाइयां
छोटी न जानी जाएं. वे सभी कठिनाइयां हम पर, हमारे
राजाओं पर, हमारे शासकों पर, हमारे पुरोहितों पर, हमारे
भविष्यवक्ताओं पर, हमारे पूर्वजों पर और आपके सभी लोगों
पर अश्शूर के राजाओं के समय से आज तक आती रही हैं.

33 फिर भी, जो कुछ आपने हम पर भेजा है, उसमें आप न्यायी
ही हैं; क्योंकि आपका व्यवहार विश्वासयोग्य था, मगर हमने ही
दुष्टता की है.

34 क्योंकि हमारे राजाओं ने, हमारे पुरोहितों ने और हमारे
पूर्वजों ने आपकी व्यवस्था का पालन नहीं किया और न ही
उन्होंने आपके आदेशों की ओर ध्यान दिया है, न आपकी
चेतावनियों पर.

35 वह राज्य, जो आपने उन्हें अपनी भलाई में दिया था, वह
देश, जो विशाल और फलवंत देश था, जो उन्हें आपकी दी हुई
भेंट थी, उसमें उन्होंने न तो आपकी सेवा की और न ही अपने
बुरे कामों से दूर हुए.

36 "देख लीजिए: हम आज भी दास ही हैं. हम उसी देश में दास
होकर रह रहे हैं, जिसे आपने हमारे पूर्वजों को यह कहते हुए
दिया था: 'इसकी अच्छी उपज को खाओ!'

37 इसकी उपज अब उन राजाओं की होकर रह गई है, जिन्हें
आपने ही हमारे पापों के कारण हम पर अधिकारी बना दिया
है. वे तो हमारे शरीर और हमारे पशुओं तक पर अपनी इच्छा
के अनुसार कर रहे हैं. इसके कारण हम बहुत दर्द में पड़े हैं.

38 "यह सब देख हम अब एक वाचा लिखकर बना रहे हैं; इस
पर हमारे नायकों, लेवियों और पुरोहितों के नाम की मोहर भी
लगा देते हैं."

Nehemiah 10:1

1 इस वाचा पर मुहर लगानेवालों के नाम इस प्रकार है:
हाकालियाह के पुत्र राज्यपाल नेहेमियाह. और सीदकियाहू,

2 सेराइयाह, अज़रियाह, येरेमियाह,

3 पशहूर, अमरियाह, मालखियाह,

4 हत्तुष, शेबानियाह, मल्लूख,

5 हारिम, मेरेमोथ, ओबदिया,

6 दानिएल, गिन्नेथौन, बारूख,

7 मेशुल्लाम, अबीयाह, मियामिन,

8 माजियाह, बिलगाइ, शेमायाह. यह सभी पुरोहित थे.

9 लेवी: ये थे अज़ानिया का पुत्र येशुआ, बिन्नूइ जो हेनादाद के
वंशजों से था, कदमिएल;

10 उनके भाई थे शेबानियाह, होदियाह, केलिता, पेलाइयाह,
हानन,

11 मीका, रेहोब, हशाबियाह,

12 ज़क्कूर, शेरेबियाह, शेबानियाह,

13 होदियाह, बानी, बेनिनू.

14 लोगों के नायक इस प्रकार थे: पारोश, पाहाथ-मोआब,
एलाम, ज़त्तू, बानी,

15 बुन्नी, अजगाद, बेबाइ,

16 अदोनियाह, बिगवाई, आदिन,

17 अतेर, हिज़किय्याह, अज्ज़ूर,

18 होदियाह, हाषूम, बेज़ाइ,

19 हरिफ, अनाथोथ, नेबाय,

20 मगफ़ीआष, मेशुल्लाम, हेज़ीर,

21 मेशेजाबेल, सादोक, यद्दुआ,

22 पेलातियाह, हानन, अनाइयाह,

23 होशिया, हननियाह, हस्षूब,

24 हल्लेहेष, पिल्हा, शोबेक,

25 रेहुम, हशाबनाह, मआसेइयाह,

26 अहीयाह, हानन, अनान,

27 मल्लूख, हारिम और बाअनाह.

28 इसके बाद बचे हुए लोग, पुरोहित, लेवी, द्वारपाल, गायक, मंदिर के सेवक और वे सभी, जिन्होंने खुद को परमेश्वर की व्यवस्था के लिए देश-देश के लोगों से अलग कर रखा था, उनकी पत्नियां, उनके पुत्र-पुत्रियां; और वे सभी, जिनमें ज्ञान और समझ थी,

29 अपने संबंधियों और उनके रईसों के साथ मिल गए. इन्होंने अपने आप पर एक शाप ले लिया और उन्होंने याहवेह की व्यवस्था के पालन करने की शपथ ली, वह व्यवस्था, जो परमेश्वर के सेवक मोशेह द्वारा दी गयी थी; सभी ने प्रण किया, कि वे परमेश्वर, हमारे प्रभु याहवेह की सभी आज्ञाओं, नियमों और विधियों का पालन करने में चौकसी करेंगे.

30 उन्होंने यह शपथ भी ली, कि वे अपनी पुत्रियों का विवाह इस देश के निवासियों से न होने देंगे और न अपने पुत्रों के लिए उनकी पुत्रियों को लाएंगे.

31 उस स्थिति में, जब उस देश के निवासी किसी शब्बाथ पर या किसी अलग किए हुए प्रभु के शब्बाथ पर बेचने के लिए अपना कुछ सामान या अनाज लेकर आएं, हम शब्बाथ पर या ऐसे अलग किए हुए दिन पर हम उनसे इसको नहीं खरीदेंगे. हम हर सातवें साल न तो खेती करेंगे और न उधार में दिए हुए पैसे को वापस लेने की कोशिश करेंगे.

32 हमने खुद अपने ऊपर यह जवाबदारी भी ले ली कि हम हर साल एक तिहाई शेकेल का दान दिया करेंगे, कि यह परमेश्वर के भवन में सेवा के लिए इस्तेमाल किया जाए;

33 पवित्र रोटी के लिए, नित्य अन्नबलि के लिए, नित्य होमबलि के लिए, शब्बाथों के लिए, नए चांद के लिए, ठहराए गए अवसरों के लिए, अलग की गई वस्तुओं के लिए, और पापबलि के लिए, कि उनके द्वारा इस्राएल के लिए प्रायश्चित किया जा सके और हमारे परमेश्वर के भवन के सारे कामों में यह योगदान दे सकें.

34 इसके अलावा हमने पुरोहितों, लेवियों और लोगों के बीच लकड़ी की भेंट के लिए चिट्ठी डाली, कि वे इसे हर साल अपने-अपने पितरों के अनुसार इस सभी अवसरों पर हमारे परमेश्वर के भवन में ले आएं कि याहवेह हमारे परमेश्वर की वेदी पर आग जलाई जा सके, जैसा कि व्यवस्था का आदेश है.

35 कि वे इस भूमि की पहली उपज को, हर एक पेड़ के पहले फल को हर साल याहवेह के भवन में ले आया करें.

36 कि वे हमारी संतान के, अपने पशुओं के, अपनी भेड़-बकरियों के पहलौठों को, लिखी गई विधि के अनुसार हमारे परमेश्वर के भवन में सेवा कर रहे पुरोहितों के सामने हमारे परमेश्वर के भवन में ले आएं.

37 हम खुद भी अपने गूंधे हुए आटे का पहला भाग, अपने दान, हर एक पेड़ का फल, नई दाखमधु का और तेल का पहला भाग हमारे परमेश्वर के भवन के कमरों में नित्य पुरोहितों के सामने ले आएंगे और अपनी भूमि की उपज का दसवां भाग लेवियों के सामने, क्योंकि लेवी ही सभी नगरों में दसवें अंश के अधिकारी हैं.

38 अहरोन के वंश का कोई पुरोहित उस अवसर पर लेवी के साथ रहेगा, जब लेवी दसवां भाग इकट्ठा करते हैं. तब लेवी हमारे परमेश्वर के भवन में आए दसवें भाग का दसवां भाग लेकर जाएगा, यानी भंडार घर के कमरों में.

39 इस्राएल वंशज और लेवी वंशज अनाज के दान, नई दाखमधु और तेल उन कमरों में ले आएंगे. वहां पवित्र स्थान में इस्तेमाल के लिए ठहराए गए बर्तन रखे होंगे और वहां सेवा कर रहे पुरोहित, द्वारपाल और गायक ठहराए हुए रहते हैं. इस प्रकार हम हमारे परमेश्वर के भवन को अकेला न छोड़ेंगे.

Nehemiah 11:1

1 इस पर प्रजा नायक येरूशलेम में बस गए मगर बाकी लोगों ने चिट्ठी डालकर दस-दस में से एक व्यक्ति को पवित्र नगर येरूशलेम में बस जाने के लिए ठहराया, जबकि बचे हुए नौ-नौ लोग दूसरे नगरों में रह गए

2 प्रजा ने उन व्यक्तियों की बहुत तारीफ़ की, जो अपनी इच्छा से येरूशलेम में बसने के लिए तैयार हो गए थे.

3 ये वे हैं, जो राज्यों (प्रदेशों) पर अधिकारी थे, जो येरूशलेम में ही रहते थे, मगर यहूदिया के नगरों में हर एक प्रधान अपनी-अपनी संपत्ति में अपने-अपने नगरों में रहता था, इस्राएल के वंशजों के पुरोहित, लेवी, मंदिर के सेवक और शलोमोन के सेवकों के वंशज.

4 यहूदाह और बिन्यामिन के कुछ वंशज येरूशलेम में ही रहते थे. यहूदाह के वंशज ये थे: अथलियाह, जो उज्जियाह का पुत्र था, जो ज़करयाह का, जो अमरियाह का, जो शेपाथियाह का, जो माहालालेल का, जो पेरेज़ के वंशज थे

5 मआसेइयाह जो बारूख का पुत्र था, जो कोल-होज़ेह का, जो हज़ाइयाह का, जो अदाइयाह का, जो योइआरिब का, जो ज़करयाह का, जो शेला के वंशज थे.

6 येरूशलेम में रह रहे पेरेज़ के सभी 468 वंशज वीर योद्धा थे.

7 बिन्यामिन के वंशज ये है: सल्लू, जो मेशुल्लाम का पुत्र था, जो योएद का, जो पेदाइयाह का, जो कोलाइयाह का, जो मआसेइयाह का, जो ईथिएल का, जो येशाइयाह का पुत्र था;

8 और उसके बाद गब्बाई और सल्लाई—कुल 928 व्यक्ति.

9 इनका प्रधान था ज़ीकरी का पुत्र योएल. हस्सनुआह का पुत्र यहूदाह, नगर का सह अधिकारी था.

10 पुरोहित वर्ग में से: योइआरिब का पुत्र येदाइयाह, याकिन

11 सेराइयाह, जो हिलकियाह का पुत्र, जो मेशुल्लाम का, जो सादोक का, जो मेराइओथ का, जो परमेश्वर के भवन के प्रधान अहीतूब का पुत्र था.

12 इनके अलावा उनके 822 संबंधी, जो मंदिर से संबंधित कार्यों के लिए चुने गए थे; और अदाइयाह, जो येरोहाम का पुत्र था, जो पेलाइयाह का, जो आमज़ी का, जो ज़करयाह का, जो पशहूर का, जो मालखियाह का,

13 और उसके 242 रिश्तेदार, जो पितरों के प्रधान थे; और अमाशसाई, जो अज़ारेल का पुत्र था, जो आहज़ाई का, जो मेशिल्लेमोथ का, जो इम्मर का पुत्र था;

14 और उनके भाई, 128 शूर योद्धा. उनका अधिकारी था ज़ाबदिएल, जो हग्गेदालिम का पुत्र था.

15 लेवियों में से: शेमायाह, जो हस्षूब का पुत्र था, जो अज़रीकाम का, जो हशाबियाह का, जो बुन्नी का पुत्र था;

16 और शब्बेथाइ और योज़ाबाद, जो लेवियों के प्रधानों में से थे, जिनकी जवाबदारी थी परमेश्वर के भवन से संबंधित बाहरी काम;

17 और मत्तनियाह, जो मीका का पुत्र था, जो ज़ब्दी का, जो आसफ का, जो प्रार्थना में धन्यवाद देने वालों का मुखिया था और बकबुकियाह भाई-बंधुओं में दूसरा पद रखता था; और अब्दा, जो शम्मुआ का पुत्र था, जो गलाल का, जो यदूथून का पुत्र था.

18 पवित्र नगर में रह रहे लेवियों की पूरी गिनती थी 284.

19 इनके अलावा: अक्कूब, तालमोन और उनके 172
रिश्तेदार, जो फाटकों पर चौकसी किया करते थे.

20 इनके अलावा बाकी इस्राएली, पुरोहित और लेवी यहूदिया
के अलग-अलग नगरों में बसे हुए थे; हर एक अपने-अपने
भाग की ज़मीन पर.

21 हां, मंदिर के सेवक ओफेल नगर में बस गए थे. ज़ीहा और
गिशपा मंदिर सेवकों के अधिकारी थे.

22 येरूशलेम में लेवियों के मुखिया थे उज्जी, जो बानी का पुत्र
था, जो हशाबियाह का, जो मत्तनियाह का, जो मीका का पुत्र,
जो आसफ के वंशजों में से एक था. ये सब परमेश्वर के भवन
में आराधना के गाने के लिए चुने गए गायक थे.

23 क्योंकि, उनके लिए राजा के विशेष आदेश और तय नियम
थे, जिनके अनुसार उनके लिए हर रोज़ का काम तय किया
गया था.

24 पेथाइयाह, जो मेशेजाबेल का पुत्र था, जो ज़ेराह के पुत्रों में
से एक था, ज़ेराह जो यहूदाह का पुत्र था. पेथाइयाह प्रजा से
संबंधित सभी कामों में राजा से साथ रहता था.

25 उन गांवों के विषय में यही कहा जा सकता है, जिनमें खेत
भी थे, यहूदाह के कुछ वंशज किरयथ-अरबा और इसके
नगरों में, दीबोन और उसके नगरों में और जेकबज़ील और
उसके गांवों में,

26 येशुआ में, मोलादाह में और बेथ-पेलेट में,

27 हाज़र-शूआल में, बेअरशेबा और इसके नगरों में,

28 ज़िकलाग में, मेकोनह में और इसके नगरों में,

29 एन-रिम्मोन में, ज़ोराह में और यरमूथ में,

30 ज़ानोहा में, अदुल्लाम में और इनके गांवों में लाकीश और
इसके खेतों में, अज़ेका और इसके नगरों में रहते थे. इस तरह
यहूदिया के निवासी बेअरशेबा से लेकर हिन्नोम घाटी तक
बसते चले गए.

31 बिन्यामिन के वंशज भी गेबा से आगे की ओर बसते चले
गए, मिकमाश और अय्याह में, बेथेल और इसके नगरों में,

32 अनाथोथ, नोब, अननियाह,

33 हाज़ोर, रामाह, गित्ताईम,

34 हदिद, ज़ेबोईम, नेबल्लात,

35 लोद और ओनो में, जो शिल्पियों की घाटी कहलाता है.

36 यहूदिया के कुछ लेवी बिन्यामिन क्षेत्र में बसने चले गए.

Nehemiah 12:1

1 शिअलतिएल के पुत्र ज़ेरुब्बाबेल और येशुआ के साथ लौटे
पुरोहित एवं लेवियों के नाम ये हैं: सेराइयाह, येरेमियाह, एज़्रा,

2 अमरियाह, मल्लूख, हत्तुष,

3 शेकानियाह, रेहुम, मेरेमोथ,

4 इद्दो, गिन्नेथौन, अबीयाह,

5 मियामिन, मोआदियाह, बिलगाह,

6 शेमायाह, योइआरिब, येदाइयाह,

7 सल्लू, अमोक, हिलकियाह और येदाइयाह, येशुआ के समय
में ये सभी पुरोहितों के प्रधान और उनके रिश्तेदार थे.

8 ये लेवी येशुआ, बिन्नूइ, कदमिएल, शेरेबियाह, यहूदाह थे.
इनके अलावा अपने संबंधियों के साथ मत्तनियाह भी.
मत्तनियाह धन्यवाद के गीतों का अधिकारी था.

9 आराधना के मौके पर बकबुकियाह और उन्नी अपने
रिश्तेदारों के साथ एक झुण्ड़ में उनके सामने खड़े हुआ करते
थे.

10 येशुआ योइआकिम का पिता था, योइआकिम एलियाशिब
का, एलियाशिब योइयादा का,

11 योइयादा योनातन का और योनातन यद्दुआ का पिता था.

12 योइआकिम के दिनों में पुरोहित और पितरों के मुखिया ये
थे: सेराइयाह के कुल से मेराइयाह; येरेमियाह कुल से
हनानियाह;

13 एज़्रा कुल से मेशुल्लाम; अमरियाह कुल से येहोहानन;

14 मल्लूख से योनातन; शेबानियाह से योसेफ़;

15 हारिम से आदना; मेराइओथ से हेलकाइ;

16 इद्दो से ज़करयाह; गिन्नेथौन से मेशुल्लाम;

17 अबीयाह से ज़ीकरी; मिनियामिन और मोआदियाह से
पिलताई;

18 बिलगाह से शम्मुआ; शेमायाह से योनातन;

19 योइआरिब से मत्तेनाइ; येदाइयाह से उज्जी;

20 सल्लू से कल्लाई; अमोक से एबर;

21 हिलकियाह से हशाबियाह, और येदाइयाह के कुल से
नेथानेल.

22 लेवियों के संबंध में यह हुआ, कि उनके पितरों के प्रधानों
का नाम एलियाशिब, योइयादा, योहानन और यद्दुआ के
समय में लिखा गया था. उसी प्रकार पुरोहितों का नाम भी
फ़ारस के राजा दारयावेश के समय में लिखा गया था.

23 लेवी के वंशज, जो पितरों के मुखिया थे, उनका नाम
एलियाशिब के पुत्र योहानन के समय में लिखा जा चुका था.

24 हशाबियाह, शेरेबियाह और कदमिएल का पुत्र येशुआ
लेवियों में प्रमुख थे. इनका चुनाव परमेश्वर के भक्त दावीद की
आज्ञा के अनुसार समूहों में स्तुति और धन्यवाद देने के लिए
किया गया था. इनके रिश्तेदार इनके सामने खड़े हुआ करते
थे.

25 मत्तनियाह, बकबुकियाह, ओबदिया, मेशुल्लाम, तालमोन
और अक्कूब द्वारपाल थे, जो फाटकों के पास के भंडारों की
चौकसी करते रहते थे.

26 ये योज़ादक के पोते, येशुआ के पुत्र, योइआकिम और
राज्यपाल नेहेमियाह और पुरोहित और शास्त्री एज़्रा के समय
के सेवक थे.

27 येरूशलेम की शहरपनाह की प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने सभी
स्थानों से लेवियों को ढूंढ़ निकाला कि उन्हें येरूशलेम लाया
जा सके, कि वे इस प्रतिष्ठा के उत्सव को आनंद में झांझों,
सारंगी और वीणा बजाकर और धन्यवाद के गीतों को गाकर
मना सकें.

28 तब गायकों के पुत्र येरूशलेम के पास के क्षेत्रों से और
नेतोफ़ाथियों के गांवों से इकट्ठा हो गए.

29 बेथ-गिलगाल और अपने खेतों से, गेबा और अज़्मावेथ से
भी, क्योंकि इन गायकों ने अपने लिए येरूशलेम के पास के
क्षेत्रों में गांव बना लिए थे.

30 पुरोहितों और लेवियों ने अपने आपको शुद्ध किया; उन्होंने
लोगों, फाटकों और शहरपनाह को भी शुद्ध किया.

31 मैंने यहूदिया के हाकिमों को अपने पास शहरपनाह के
ऊपर आमंत्रित किया और दो बड़े गायकों के झुण्ड़ को
धन्यवाद देने की जवाबदारी सौंप दी. पहले गायकों के झुण्ड़
का काम था कि वह शहरपनाह पर चढ़कर दायीं ओर कूड़ा
फाटक की दिशा में आगे बढ़ें.

32 होशाइयाह और यहूदिया के प्रधानों में से आधे प्रधान
उनका अनुसरण कर रहे थे.

33 अज़रियाह, एज्रा, मेशुल्लाम,

34 यूदाह, बिन्यामिन, शेमायाह, येरेमियाह

35 और तुरहियों के साथ पुरोहितों के कुछ पुत्र भी उनके साथ
थे और ज़करयाह, जो योनातन का पुत्र था, जो शेमायाह का,
जो मत्तनियाह का, जो मिकाइयाह का, जो ज़क्कूर का, जो
आसफ का पुत्र था;

36 उसके साथ उसके संबंधी शेमायाह, अज़ारेल, मिलालई,
गिलालाई, मआई, नेथानेल, यूदाह और हनानी थे. यह अपने
साथ परमेश्वर के जन दावीद के बाजे लिए हुए थे. शास्त्री एज्रा
उनके आगे-आगे थे.

37 झरना फाटक शहरपनाह पहुंचकर वे दावीद-नगर की
सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गए. वे सीधे दावीद के घर के ऊपर की
दीवार की सीढ़ियों से पूर्व की ओर जल फाटक तक पहुंच गए.

38 दूसरा गायकों का झुण्ड़ बायीं ओर बढ़ गया. मैं उनका
अनुसरण कर रहा था. आधा झुण्ड़ शहरपनाह के उस भाग
पर था, जो भट्ठियों के खंभे के ऊपर बनाई गई थी. हम लोग
भट्ठियों के मीनारों के ऊपर बनी शहरपनाह से चौड़ी
शहरपनाह की ओर बढ़े

39 फिर एफ्राईम फाटक की ओर, पुराने फाटक की ओर,
मछली फाटक की ओर, हनानेल खंभे की ओर और शतक
खंभे की ओर जाते हुए मछली फाटक तक. वे सभी पहरेदार
फाटक पर जाकर ठहर गए.

40 इसके बाद दोनों ही गायकों के झुण्ड़ परमेश्वर के भवन में
जाकर खड़े हुए. मैं भी वहां जा खड़ा हुआ. मेरे साथ वहां
अधिकारी वर्ग में से आधे अधिकारी शामिल थे.

41 वहीं शोफ़ार लिए हुए पुरोहित थे एलियाकिम, मआसेइयाह,
मिनियामिन, मिकाइयाह, एलिओएनाइ, ज़करयाह और
हननियाह.

42 इनके अलावा वहां मआसेइयाह, शेमायाह, एलिएज़र,
उज्जी, येहोहानन, मालखियाह, एलाम और एज़र नाम पुरोहित
भी थे. यिज़राहियाह के निर्देशन में गायकों ने अपना गाना
प्रस्तुत किया.

43 उस मौके पर लोगों ने बड़ी-बड़ी बलियां चढ़ाईं. वहां बहुत
ही आनंद मनाया जा रहा था, क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से
दिया गया आनंद था-यहां तक कि स्त्रियां और बच्चे तक
आनंद मना रहे थे; फलस्वरूप येरूशलेम का यह आनंद दूर-
दूर तक सुनाई दे रहा था.

44 उसी अवसर पर भंडारों के अधिकारी भी चुने गए, कि वे
सभी दान, पहले फलों, दसवें अंश को नगरों के खेतों के
अनुसार, व्यवस्था के द्वारा उन भागों को पुरोहितों और लेवियों
के लिए इकट्ठा करें; क्योंकि यह यहूदिया के लोगों के लिए
आनंद का विषय था कि ये पुरोहित और लेवी सेवा करते थे.

45 इन सभी ने दावीद और उनके पुत्र शलोमोन द्वारा दिए गए
आदेश के अनुसार गायकों और द्वारपालों के साथ मिलकर
अपने परमेश्वर की आराधना और शुद्ध करने की सेवा की.

46 क्योंकि पहले के समय में, यानी दावीद और आसफ के
समय में गायकों के लिए एक प्रधान हुआ करता था, जब वे
परमेश्वर के लिए स्तुति के गीत और धन्यवाद के गीत प्रस्तुत
किया करते थे.

47 इस प्रकार ज़ेरुब्बाबेल और नेहेमियाह के शासनकाल में
गायकों और द्वारपालों के लिए ठहराए गए हर दिन का भाग
सभी इस्राएली चढ़ाया करते थे और लेवियों का भाग पवित्र
करके दिया करते थे और तब लेवी अहरोन के वंशजों के लिए
ठहराया गया भाग अलग रख दिया करते थे.

Nehemiah 13:1

1 उस दिन सभा के लिए मोशेह की पुस्तक ऊंची आवाज में
पढ़ी गई. इस पुस्तक में यह लिखा हुआ पाया गया कि परमेश्वर
की सभा में न तो किसी अम्मोनी के और न किसी मोआबी के
प्रवेश की आज्ञा है,

2 क्योंकि उन्होंने इस्राएल के लिए भोजन और पानी का
इंतजाम करने की बजाय उन पर शाप देने के लक्ष्य से
बिलआम को पैसे दिए थे. मगर हमारे परमेश्वर ने शाप को
आशीर्वाद में बदल दिया.

3 इसलिये जब उन्होंने उस व्यवस्था को सुना, उन्होंने सभी
विदेशियों को इस्राएल में से बाहर कर दिया.

4 इसके पहले, पुरोहित एलियाशिब, जिसे हमारे परमेश्वर के
भवन के कमरों का अधिकारी चुना गया था, वास्तव में
तोबियाह का रिश्तेदार था.

5 उसने तोबियाह के लिए एक बड़े कमरे को बना रखा था,
जहां इसके पहले अन्नबलि, लोबान, तरह-तरह के बर्तन और
लेवियों, गायकों, द्वारपालों और पुरोहितों के लिए इकट्ठा दानों
के ठहराए गए अन्न, अंगूर के रस और तेल का दसवां भाग
जमा किया जाता था.

6 मगर ऐसा हुआ कि इस समय में मैं येरूशलेम में था ही नहीं,
क्योंकि बाबेल के राजा, अर्तहषस्ता के समय के बत्तीसवें साल
में मैं राजा से मिलने गया हुआ था, मगर यहां कुछ समय रहने
के बाद मैंने राजा की आज्ञा ली

7 और येरूशलेम आ गया. मुझे उस बुराई के बारे में पता चला,
जो एलियाशिब ने तोबियाह के लिए किया—उसने परमेश्वर के
भवन के आंगन में तोबियाह के लिए एक कमरा तैयार किया
था.

8 इससे मैं बहुत नाराज़ हुआ; तब मैंने तोबियाह का सारा
सामान उस कमरे के बाहर फेंक दिया.

9 तब मेरे आदेश पर वे कमरे शुद्ध किए गए. मैंने परमेश्वर के
भवन के बर्तन, अन्नबलि और लोबान दोबारा उस कमरे में
रखाव दिए.

10 तब मुझे यह भी पता चला कि लेवियों के लिए ठहराया हुआ
भाग उन्हें दिया ही नहीं गया था, फलस्वरूप तरह-तरह की
सेवाओं के लिए चुने गए लेवी और गायक सेवा का काम
छोड़कर जा चुके थे-अपने-अपने खेतों में खेती करने.

11 इसलिये मैंने अधिकारियों को फटकार लगाई, "परमेश्वर
का भवन क्यों छोड़ दिया गया है?" तब मैंने उन सबको वापस
बुलाकर उन्हें सेवा के काम पर दोबारा नियुक्त कर दिया.

12 तब सारे यहूदिया के लोगों ने भंडार में अनाज, अंगूर का
रस और तेल का दसवां भाग रखवा दिया.

Nehemiah 13:1

13 तब मैंने पुरोहित शेलेमियाह को, शासक सादोक को और
लेवियों में से पेदाइयाह को भंडारों का अधिकारी ठहरा दिया.
उनके अलावा मैंने, मत्तनियाह के पोते ज़क्कूर के पुत्र हनान
को चुना, क्योंकि ये सभी विश्वासयोग्य पाए गए. इनकी
जवाबदारी थी अपने रिश्तेदारों में सामग्री बांटना.

14 मेरे परमेश्वर, इस काम के लिए आप मुझे याद रखें. सच्चाई
से किए गए मेरे कामों को, जो मैंने परमेश्वर के भवन और
इसकी सेवा में किए हैं, आप मिटा न दीजिए.

15 उन्हीं दिनों में मेरे सामने यह भी आया कि यहूदिया में कुछ
व्यक्ति ऐसे थे, जो शब्बाथ पर अंगूर रौंद रहे थे, कुछ अनाज
के बोरे नगर में ला रहे थे, कुछ इन्हें गधों पर लाद रहे थे, सभी
प्रकार का सामान शब्बाथ पर येरूशलेम में लाया जा रहा था,
वैसे ही अंगूर का रस, अंगूर, अंजीर और सभी प्रकार के बोझ.
इसलिये मैंने शब्बाथ पर भोजन बेचने पर उन्हें डांटा.

16 येरूशलेम में कुछ सोरवासी भी रहने लगे थे, जो मछली
और सब प्रकार का बिकने वाला सामान वहां से बिक्री कर रहे
थे. वे यह सब यहूदाह के वंशजों को शब्बाथ पर बेच रहे थे;
हां, येरूशलेम ही में!

17 तब मैंने यहूदिया के रईसों को फटकार लगाई. मैंने उनसे
कहा, "आप लोग शब्बाथ को अपवित्र कर यह कैसी बुराई
कर रहे हैं?

18 क्या आपके पूर्वजों ने यह नहीं किया था, जिसके
फलस्वरूप हमारे परमेश्वर ने हम पर और इस नगर पर यह
सारी विपत्ति ड़ाल दी है? यह होने पर भी आप लोग शब्बाथ
को अपवित्र करके इस्राएल पर परमेश्वर के क्रोध को बढ़ा रहे
हैं."

19 तब यह हुआ कि शब्बाथ शुरू होने के ठीक पहले, जब
येरूशलेम के फाटकों पर अंधेरा छा ही रहा था, मैंने आदेश
दिया कि फाटक बंद कर दिए जाएं और वे शब्बाथ खत्म होने
के पहले बिलकुल न खोले जाएं. इसके बाद मैंने अपने ही कुछ
सेवकों को फाटकों पर ठहरा दिया कि शब्बाथ पर किसी भी
बोझ को अंदर न आने दिया जाए.

20 एक या दो मौके ही ऐसे गए होंगे, जब विभिन्न प्रकार के
व्यापारियों और बेचने वालों ने येरूशलेम के बाहर रात बिताई
थी.

21 तब मैंने उन्हें इस प्रकार चेतावनी दी, “क्यों आप लोग
शहरपनाह के पास रात बिताते हैं? यदि आप दोबारा यह
करते पाए जाएंगे, तो मुझे आप पर ताकत का इस्तेमाल करना
पड़ेगा.” इस चेतावनी के बाद वे शब्बाथ पर येरूशलेम कभी
नहीं आए.

22 तब मैंने लेवियों को आदेश दिया कि शब्बाथ को पवित्र
करने के उद्देश्य से वे अपने आपको शुद्ध कर द्वारपाल के
समान आया करें. मेरे परमेश्वर, इस भले काम के लिए भी आप
मुझे याद रखिए और अपनी बड़ी करुणा के अनुसार मुझ पर
अपनी दया हमेशा बनाए रखिए.

23 उन्हीं दिनों में मेरा ध्यान इस सच्चाई की ओर भी गया, कि
यहूदियों ने अशदोद, अम्मोन और मोआब की स्त्रियों से
विवाह किया हुआ था.

24 उनकी संतान के विषय में सच्चाई यह है कि उनकी संतान
के आधे लोग अशदोद की भाषा बोलते है, उनमें से कोई भी
यहूदिया की भाषा में बातचीत कर ही नहीं सकता, बल्कि वे
सिर्फ अपने ही लोगों की भाषा का इस्तेमाल करते हैं.

25 इसलिये मैंने उनसे बहस की, उन्हें धिक्कारा, उनमें से कुछ
पर तो मैंने हाथ भी छोड़ दिया और कुछ के बाल नोचे. तब मैंने
उन्हें परमेश्वर की शपथ दी, “तुम उनके पुत्रों को अपनी पुत्रियां
विवाह के लिए नहीं दोगे और न उनकी पुत्रियां को अपने पुत्रों
के लिए या खुद अपने विवाह के लिए लोगे.

26 क्या इस्राएल के राजा शलोमोन ने इन्हीं विषयों में पाप नहीं
किया था? इतना होने पर भी अनेकों देशों में उनके समान
राजा कोई न था. उन पर उनके परमेश्वर का प्रेम स्थिर था और
परमेश्वर ने उन्हें सारे इस्राएल पर राजा ठहराया दिया; फिर
भी, उन विदेशी स्त्रियों ने उन्हें तक पाप करने के लिए फेर
दिया था.

27 तब क्या यह सही होगा कि हम आपसे सहमत होकर यह
बड़ी बुराई करें और विदेशी स्त्रियों से विवाह करने के द्वारा
अपने परमेश्वर के विरुद्ध विश्वासघात करें?”

Nehemiah 13:1

28 यहां तक कि महापुरोहित एलियाशिब के पुत्रों में से एक
योइयादा, होरोनी के सनबल्लत का दामाद था. मैंने उसे वहां
से निकाल दिया.

29 मेरे परमेश्वर, आप इन्हें याद रखिए, क्योंकि इन्होंने पुरोहित
के पद को और पुरोहित की और लेवियों की वाचा को अशुद्ध
किया है.

30 इस प्रकार मैंने उन्हें उन सभी से शुद्ध कर दिया, जो कुछ
विदेशी था. मैंने पुरोहितों और लेवियों के लिए उनके कामों को
ठहरा भी दिया-हर एक के लिए निश्चित काम.

31 मैंने ठहराए गए अवसरों के लिए लकड़ी और पहले फलों
को देने का भी प्रबंध कर दिया. मेरे परमेश्वर, मेरी भलाई के
लिए मुझे याद रखिये!